IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 3, December 2025
Impact Factor: 7.67

पूर्व मध्य काल का पर्यावरणीय अध्ययन (600 ईस्वी से 1100 ईस्वी तक)

सौरभ सिंह
शोधार्थी
प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, म.प्र.

सारांश:-

पूर्व मध्य काल भारत में पर्यावरण विविध और क्षेत्रीय रूप से भिन्न था, जो भौगोलिक, जलवायु और मानवीय गतिविधियों से प्रभावित था। इस काल में भारत में गुप्त साम्राज्य का पतन हो चुका था, और विभिन्न क्षेत्रीय राजवंश जैसे पाल, चोल, चालुक्य और राष्ट्रकूट सत्ता में थे। इस अवधि में भारत में मानसूनी जलवायु प्रणाली प्रमुख थी, मानसून ने कृषि को प्रभावित किया, और अच्छे मानसून से समृद्धि बढ़ती थी, जबकि सूखा या अनियमित बारिश से अकाल पड़ता था। कुछ ऐतिहासिक साक्ष्य बताते हैं कि इस काल में जलवायु अपेक्षाकृत स्थिर थी, लेकिन क्षेत्रीय स्तर पर सूखे या बाढ़ की घटनाएँ दर्ज की गईं।भारत के अधिकांश हिस्सों में घने जंगल थे, विशेष रूप से हिमालय क्षेत्र, मध्य भारत (विंध्य और सतपुड़ा), और दक्षिण भारत में पश्चिमी घाट। ये जंगल वन्यजीवों जैसे बाघ, हाथी, हिरण और विभिन्न पक्षियों का निवास स्थान थे। जंगलों का उपयोग इमारती लकड़ी, औषधीय पौधों और शिकार के लिए किया जाता था।

मुख्य शब्द:- कृषि, अकाल, वन और उद्यान, सिंचाई आदि।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-30454